धर्मसेवा-पथप्रदर्शक

श्रीभारतधर्म महामण्डल हिन्दू जाति और हिन्दुस्थान का अखिल भारतीय धार्मिक संस्था है। इसकी स्थापना अर्ध शताब्दीसे अधिक कालसे हुई है। भारतखण्ड अर्थात् हिन्दूस्थान के प्रत्येक जनपद, प्रत्येक नगर, प्रत्येक ग्राममें इसके कार्यक्षेत्रके विस्तारके लिये प्रतिनिधि तथा कार्यकर्ता-के रहनेकी नितान्त आवश्यकता है। उसके लिये यह 'पथ-प्रदर्शक' नामक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। जो गृहपति गण, स्वदेश हितैषी सज्जन, या माताएँ धर्मसेवा या देशसेवाकी इच्छा रखती हों, उनको यह पुस्तक विना मूल्य भेजी जा सकती है।

श्रीभारतधर्म महामण्डल शास्त्र प्रकाशन
विभाग द्वारा प्रकाशित
काशी

मूल्य =) आना

(२४ पृष्ठ से क्रमागत)

हठयोग संहिता	१-)
तत्त्वबोध	।=)
परलोक रहस्य	।=)
चतुर्दश लोकरहस्य	।=)
सतीचरित्र चन्द्रिका	३)
नित्यकर्म चन्द्रिका	।=.
सदाचार सोपान	=)
कन्याशिक्षा सोपान	=)
ब्रह्मचर्य सोपान	।=)
राजशिक्षा सोपान	।)
साधन सोपान	।=)
शास्त्र सोपान	।=)
धर्मप्रचार सोपान	।=)
उपदेश पारिजात	॥।)
भारतवर्ष का इतिवृत्त	३)
स्तोत्र कुसुमाञ्जलि	।=)
दैवीमीमांसादर्शन(हिन्दी)	२।)
संगीत सुधाकर	॥-)
पुराण रहस्य	२।)
गो-व्रत-तीर्थ महिमा	॥।)
संन्यासधर्म पद्धति	१॥)
व्रतोत्सव चन्द्रिका	३)
सुगम साधन चन्द्रिका	=)
धर्मसुधाकर	३)
श्रीमधुसूदन संहिता	२।)
वाणीपुस्तक मालाके धर्म ग्रन्थ	
भारतधर्म समन्वय	१=)
धर्मतत्त्व	१=)
धर्मप्रवेशिका	।=)
वेदान्तदर्शन चतुःसूत्री	।=)
अपूर्वभाष्य सहित	॥-)
व्रतोत्सव कौमुदी	॥-)
सतीसदाचार	॥।)
ईशोपनिषद्	॥।)
केनोपनिषद्	॥।)
कठोपनिषद्	३)
मार्कण्डेपुराण (हिन्दीभाष्य)	
प्रत्येक भाग	१॥)
आदर्श देवियाँ दो भाग प्रति भाग	१.-)

कार्याध्यक्षः—

श्रीमहामण्डल कार्यालय जगतगंज, बनारस कैंट,

धर्म सेवा पथ प्रदर्शक

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मङ्गलाचरण

अकुण्ठं सर्वकार्येषु, धर्मकार्यार्थमुद्यतम् ।
वैकुण्ठस्य हि यद्रूपं, तस्मै कार्यात्मने नमः ॥

(१) आर्यजाति किसको कहते हैं ?

मनुष्य जातियोंमें जो जाति अपने सब कार्योंमें अध्यात्म लक्ष्य रक्खे अर्थात् अपने जीवन-यात्राके सब कर्मोंमें प्रधान रूपसे आत्माकी ओर लक्ष्य रक्खे और इन्द्रियोंकी ओर लक्ष्य गौण समझे. उसको आर्यजाति कहते हैं ।

जो मनुष्यजाति अपनी सामाजिक व्यवस्थामें वर्णाश्रम-धर्मकी शृङ्खलाको मानना अपना कर्त्तव्य समझे, शास्त्रोंमें उसको आर्यजाति कहा गया है ।

जो मनुष्यजाति आचारका पालन करना, अर्थात् शरीरके सब कर्मोंके साथ धर्मका पालन करना अपना कर्त्तव्य समझे, वेद और शास्त्रोंमें उसको आर्यजाति कहा है ।

जिस जातिकी स्त्रियोंमें सतीत्वधर्मके पूर्ण विकाशको शुभ माना जाय, उसको आर्यजाति कहते हैं। आर्यजातिके ये ही चार मुख्य लक्षण हैं। इन लक्षणोंका अभाव जिस मनुष्यजातिमें हो, शास्त्रोंने उसको अनार्यजाति कहा है। हमारे शास्त्रोंमें केवल आँख, नाक और मुख देखकर जाति निर्णय करनेकी व्यवस्था नहीं है।

(२) सनातनधर्म किसको कहते हैं?

सर्वशक्तिमान् श्रीभगवान्की जिस नियामिकाशक्तिने सारे ब्रह्माण्डको धारण कर रक्खा है और ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनोंको जो उन्नतिकी ओर ले जाती है, उसी महाशक्तिका नाम धर्म है। मनुष्यजाति उसी धर्मके बलसे अभ्युदय अर्थात् इस लोककी उन्नति और परलोककी उन्नति प्राप्त करती है और अन्तमें मुक्ति पदको पहुँच जाती है। यही मनुष्योंका धर्म अर्थात् मानवधर्म कहाता है और यही सनातन धर्म है।

वेद और शास्त्रोंमें सनातनमानवधर्मके चार भेद बताये गये हैं। यथा—(१) साधारण धर्म, (२) विशेष धर्म, (३) असाधारण धर्म और (४) आपद्धर्म।

साधारण धर्म उसको कहते हैं, जो आर्यजाति और अनार्यजाति, स्त्री और पुरुष, सबके लिये समान रूपसे हितकारी हो। साधारण धर्मके उदाहरण ये हैं:—दान, तप, अपने अधिकारानुसार यज्ञ, सत्कर्म अर्थात् पुण्य करना, सत्य

बोलना, चोरी न करना, भगवान्‌की उपासना करना, ज्ञान प्राप्त करना, धैर्य, क्षमा, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह आदि सर्व साधारण धर्मके अङ्ग हैं।

विशेष धर्म उसको कहते हैं, जो विशेष विशेष अधिकारीके लिये हितकारी और उन्नतिकारी हो। उसके उदाहरण ये हैं:—पुरुषधर्म, नारीधर्म, गृहस्थधर्म, संन्यासीधर्म, वैष्णवधर्म, शैवधर्म, नाना सम्प्रदायके, नाना पन्थोंके और नाना धर्ममार्गोंके अलग अलग धर्म इत्यादि।

असाधारण धर्म उसको कहते हैं, जिसके द्वारा किसी व्यक्तिविशेषमें पूर्वजन्मकी अथवा इस जन्मकी तपस्याके कारण कोई असाधारण शक्ति पैदा हो और उसके द्वारा वह कोई असाधारण धर्म पालन कर सके। इसके उदाहरणमें महर्षि विश्वामित्रका एक जीवनमें क्षत्रियसे ब्राह्मण होना, महारानी द्रौपदीका पाँच पति होने परभी सतीत्व की रक्षा करना। भगवान् रामचन्द्रका छिपकर बालिको मारना। भगवान् कृष्णचन्द्रकी पूर्व प्रतिज्ञाके अनुसार रासलीलाका महोत्सव नैमित्तिक रूपसे करना, इत्यादि समझने योग्य हैं।

आपद्धर्म उसको कहते हैं कि, विपत्तिके समय आनेपर स्त्री हो अथवा पुरुष, मनुष्य जाति हो अथवा एक व्यक्ति हो, अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिये और अपने भविष्यके अभ्युदयके विचारसे बाध्य होकर जो असत् कर्म करे। इसका उदाहरण महर्षि विश्वामित्रके जीवनमें पाया जाता है। वे घोर

दुर्भिक्षके समय कुत्तेके मांससे पितृ-यज्ञ करनेको और उसको खाकर शरीर रक्षा करनेको तैयार हुए थे। आपद्धर्म व्यक्ति और जातिके विपत्तिके समयमें ही पालन करने योग्य है, अन्य समय में नहीं।

सनातनधर्म अन्य किसी धर्मका बाधक नहीं हो सकता। सनातनधर्म सर्वजीवहितकारी है। हाँ, सनातनधर्मी आर्य-जाति अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिये कुछ विशेष नियम पालन करती है, उसके कुछ उदाहरण ये हैं:-वर्णधर्मकी रक्षा-से रजोवीर्यकी शुद्धिकी रक्षा करना। आश्रमधर्मकी रक्षासे प्रवृत्तिधर्म और निवृत्तिधर्मकी रक्षा करना। शुद्धाशुद्ध-विवेकसे शरीरके पाचों कोषोंकी शुद्धिकी रक्षाका प्रयत्न करते रहना। जन्मान्तरवाद, दैवीजगत्का अस्तित्व, देवता ऋषि और पितरों पर विश्वास, परलोक और श्राद्धकर्म पर विश्वास, तपस्या द्वारा नारी जातिकी पवित्रताकी रक्षा करते हुए उनमें सती धर्मका लोप न होने देना। अपने जीवनके सब कर्मोंमें धर्म पर विशेष लक्ष्य रखना। दूसरेके धर्मपर आघात न पहुँचाना। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ और पितृयज्ञ द्वारा प्रतिदिन ऋषि, देवता और पितरोंकी पूजा करना। भूतयज्ञ द्वारा सब प्राणियोंकी पूजा करना और अतिथिसेवारूपी नृयज्ञ द्वारा मनुष्यमात्रको भगवान्का स्वरूप समझकर उसकी पूजा करना। बड़ोंका आदर करके अपनेको धन्य समझना इत्यादि।

(३) श्रीभारतधर्ममहामण्डल क्या है ?

मीमांसा शास्त्रमें आर्यधर्मके अर्थात् हिन्दूधर्मके सोलह प्रधान अङ्ग बताये हैं, इन्हें कोई देखना चाहें, तो श्रीभारत धर्ममहामण्डल प्रधानकार्यालय से 'हिन्दूधर्मका स्वरूप' नामक पुस्तिका मंगवाकर देखें। धर्मवक्ता और धर्मसेवकोंको तथा ग्रामसंगठन आदि देश हितकारीकार्योंमें दत्तचित्त सज्जनोंको यह पुस्तक विना मूल्य मिल सकती है।

आर्यजाति और सनातन धर्मी प्रजाकी सब प्रकारसे रक्षा और उन्नति करानेके लिये, श्रीभारतधर्ममहामण्डलका जन्म पिछली शताब्दीमें हुआ है। कलियुग में संघशक्ति अर्थात् मनुष्योंकी समवेतशक्तिको सर्वोपरि माना जाता है। उसी-समवेतशक्तिकी सुकौशलपूर्ण क्रिया द्वारा सनातनधर्मकी रक्षा, उसकी शिक्षाका विस्तार और धर्मप्रचार करते हुए इस जातिको सुसंगठित बनाना और उसके महत्त्व और अस्तित्व-की रक्षा करना, इत्यादि श्रीमहामण्डलका ध्येय है। श्रीभारत-धर्ममहामण्डलके अनेक कार्यविभाग हैं। उसकी कार्य-प्रणाली को विदित करनेके लिये श्रीमहामण्डलके कुछ विभागोंका वर्णन नीचे किया जाता है।

१. विद्याप्रचार और धर्मशिक्षा विभाग—जिसका नाम अखिल भारतवर्षीय धार्मिकाध्यात्मिक संस्कृतविश्वविद्यालय है, और अंग्रेजी नाम All India Sanskrit and Spiritual university है। इस शिक्षा-विभागके चार शाखा-

विभाग हैं। यथाः—

(क) अनुसन्धान विभाग अर्थात् Research Department, इस विभागके द्वारा अनेक अप्राप्य शास्त्र, अप्राप्य ग्रन्थ आदिका अनुसन्धान किया गया है,

(ख) परीक्षा विभाग अर्थात् Examining Department विश्वविद्यालयके इस विभाग द्वारा हिन्दुस्तान भरमें स्कूल, कालेज और अन्य पाठशालाओंमें धर्मशिक्षाके प्रबंधका आयोजन किया जाता है और जगह-जगह परीक्षाकेन्द्र खोल कर नाना श्रेणीकी परीक्षाएँ लेकर विद्याप्रचार और धर्मशिक्षा विस्तारका आयोजन किया गया है।

(ग) शास्त्र प्रकाश विभाग अर्थात् Publication Department इस विभागके द्वारा सैकड़ों छोटे बड़े ग्रन्थ, सैकड़ों धर्म सम्बन्धी पाठ्यपुस्तकें, धर्मकल्पद्रुम नामक धार्मिक विश्वकोश आदि अनेक मौलिक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं जिनकी सूची मंगाने से विद्वज्जनोंको मालूम होगा कि इस विभागके द्वारा जो महान-कार्य हो रहा है इसके द्वारा इस समय हिन्दूजातिको सहायता ही नहीं मिलेगी वल्कि कलियुगके अन्तपर्यन्त इस जातिकी रक्षा होगी।

(घ) वालक-वालिकाओंको घरमें धार्मिक शिक्षा देनेका विभाग अर्थात् Home Religious Culture

Department—इस कार्यविभागके द्वारा प्रत्येक हिन्दू गृहस्थको अपने घरमें धार्मिक-शिक्षा देनेके लिये पुस्तकादिकी सहायता पहुँचाई जाती है।

२. धर्म-प्रचार-विभाग—इस विभागके द्वारा श्रीमहामण्डल अपने धर्मप्रचारकों और धर्मसेवकोंके द्वारा सनातन धर्मका प्रचार करता है और पुस्तक-पुस्तिकाओंको वितरण कर, इस विभागके उद्देश्योंकी पूर्ति करनेका प्रयत्न करता रहता है। इस विभागका कार्यक्षेत्र व्यापक होनेके कारण, इसके द्वारा लोकसंग्रह, समाजसंगठन, धनसंग्रह, सभ्यसंग्रह, धर्म-सभा-स्थापन, परीक्षाकेन्द्र-स्थापन, प्रान्तीय मण्डलोंका संगठन, ग्राम और नगरकी प्रजाकी धार्मिक और सामाजिक उन्नतिमें सहायता दान, धार्मिक व्यक्तियोंको उत्साह-दान आदि शुभ कार्य हुआ करते हैं। इस विभागकी सफलता हिन्दूनेतृवृन्द और सर्वसाधारण हिन्दू जनताकी सहायतापर निर्भर करती है। प्रत्येक नगर और ग्रामके सद्गृहस्थगण अथवा स्थानीय-सभासमूह यदि उत्साहके साथ अपना कर्तव्य समझ कर इस शुभ कार्यमें सहयोग देंगे तभी महामंडलकी शुभ इच्छा पूर्ण होकर समाजका मङ्गल हो सकेगा।

३. रक्षा-विभाग—इस कार्य-विभागके द्वारा सनातनधर्मावलम्बी हिन्दू प्रजाके धार्मिक एवं सामाजिक स्वत्वोंकी रक्षा की जाती है। भारतीय कौंसिलों और प्रान्तीय गवर्नमेंटकी कौंसिलों तथा देशी रजवाड़ोंमें सनातनधर्मपर अथवा

सनातनधर्मी प्रजापर यदि आक्रमण हो तो उससे रक्षा करनेका यथासम्भव उपाय, ग्राम, नगर, जिला और प्रान्तमें संगठन करके सनातनधर्मके स्वत्वोंकी रक्षा देशकालपात्रानुसार यह विभाग करता है।

४. धर्मालयसंस्कार विभाग—इस विभागके द्वारा तीर्थ, देवमन्दिर आदि धर्मालयोंके संस्कार, उन्नति, सुसंगठनका प्रयत्न किया जाता है। तीर्थ, देवमन्दिर आदिका जीर्णोद्धार करना भी इस विभागका कार्य है।

५. मानार्पण विभाग—इस विभागके द्वारा योग्य व्यक्तियोंको धर्मोपाधि-मानपत्र, विद्योपाधि-मानपत्र, केवल सम्मान सूचक मानपत्र, सुवर्ण रौप्यपदक आदि अर्पण करके धर्म प्रवृत्ति, विद्योन्नति, संस्कृतभाषाकी उन्नति, राष्ट्रभाषा हिन्दीकी उन्नति, स्त्री शिक्षाकी उन्नति, नाना कला तथा विज्ञानकी उन्नति, सामाजिक और धार्मिक उन्नति आदि कार्यों में प्रोत्साहन दिया जाता है।

६. धर्मशिक्षा विभाग—इस विभागके द्वारा उपदेशक-महाविद्यालयमें जो काशी के महामण्डल प्रधान कार्यालयमें स्थापित है इसमें शिक्षा देकर धर्मोपदेशक प्रस्तुत किए जाते हैं। धर्मोपदेशकोंको, उपदेशक, महोपदेशक और महामहोपदेशक, इस प्रकारकी तीन श्रेणीकी उपाधियोंसे अलंकृत करके धर्मकार्योंमें सन्नद्ध कराया जाता है। धर्मप्रचारकों और धर्मसेवकोंको यथायोग्य शिक्षा देकर उनको इस अखिल-

भारतीय धर्मसंस्था का अंग बनाया जाता है। स्त्रियोंको सनातनधर्मकी उचित शिक्षा देनेके लिये और योग्य आर्य-महिलाधर्मप्रचारिका और धर्मसेविका प्रस्तुत करनेके लिये काशीमें आर्यमहिला महाविद्यालय भी स्थापित है। यह आर्यमहिलाओं का महाविद्यालय एक अद्वितीय संस्था भारतमें है। उसमें एक कालेज, नार्मल स्कूल, छोटी बालिकाओं के लिये स्कूल और अन्नसत्र आदिके अतिरिक्त एक ऐसा विभाग है जिसमें नियमित शिक्षा देकर हिन्दू उच्च जातिकी विधवाओंको उपयुक्त धर्मप्रचारिका और धर्म-सेविका प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे असाधारण प्रतिष्ठान की सहायता से हिन्दी भाषाभाषी प्रान्तोंमें आर्यमहिलाएँ अपने घरमें बैठकर धर्मकी उच्च शिक्षा प्राप्तकर सकती हैं। यह संस्था श्रीमहामण्डल से पृथक् रजिष्टर्ड है और इसका प्रबन्ध स्वतंत्र है।

७. यज्ञ और देवानुष्ठान विभाग—जैसे मानदान विभाग द्वारा विद्वज्जनोंके गुणोंके पूजारूपी नृयज्ञका प्रबन्ध किया गया है, उसी प्रकार इस विभागद्वारा सनातनधर्मियोंके केन्द्रस्थान, श्रीकाशीपुरीमें श्रीभारतधर्ममहामण्डलके प्रधान कार्यालयके हातेमें एक सुप्रसिद्ध यज्ञमण्डप स्थापित करके, वैदिक और स्मार्त यज्ञोंके अनुष्ठानका प्रबन्ध किया गया है। दो सौ से अधिक यज्ञोंका अनुष्ठान हो चुका है।

२

जिससे याज्ञिक विद्वानोंका उत्साह बढ़े और भारतखण्डमें यज्ञका प्रचार बढ़े, इसका प्रयत्न किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस विभागके द्वारा सूक्ष्म दैवीराज्यके सम्वर्धनके निमित्त और देवताओंकी कृपा प्राप्तिके निमित्त नियमित तिथियोंपर नाना देवदेवियोंकी शास्त्रीय पूजाकी व्यवस्था की गई है। इस प्रकारसे कई विभागोंके द्वारा श्रीभारतधर्म-महामण्डलका धर्मकार्य संचालित होता रहता है।

जगद्गुरु भारतखण्ड (हिन्दुस्थान) के पूज्यपाद महर्षियोंने जिस प्रकार शिक्षा विज्ञानकी उत्तम रीतिसे छानबीन की है, वैसी भारतवर्ष (भूमण्डल) के और किसी मनुष्य जातिके द्वारा नहीं हो सकी है। पूज्यपाद महर्षियोंने अपनी बतायी हुई शिक्षा प्रणालीमें ऐसी सुकौशल पूर्ण रीतियाँ रक्खी हैं जिनसे जीवमें भगवद्भक्तिका उदय हो, उनके अन्तः करणोंमें भगवत्स्वरूपका विकास हो, दैवी जगत्का विस्तृत ज्ञानप्राप्त हो और मनुष्य जातिमें सब प्रकारका अभ्युदय होकर उनमें बुद्धिबल, विद्याबल, धनबल और जनबल बढ़े। उनके उपदेशों का यह तात्पर्य है कि, शिल्प (आर्ट) द्वारा जड़मय प्राकृतिक राज्यकी नकल की जाती है और पदार्थ विज्ञान (सायन्स) के द्वारा जड़मय प्राकृतिक राज्य पर आधिपत्य स्थापित किया जाता है। इतना ही नहीं, साधारण दृष्टिसे पदार्थविज्ञान (सायन्स) के अनुशीलनमें एकसे एक चमत्कार भी देखनेमें आता है, परन्तु वह चमत्कार

केवल जड़मय प्राकृतिक राज्यका ही विषय है, इसमें ,सन्देह नहीं। दार्शनिक विज्ञान उपर्युक्त दोनों विषयोंसे नितान्त भिन्न है। अन्तर्जगत्में प्रवेश करानेवाला, जड़मय राज्यसे परे चेतन राज्यमें पहुँचानेवाला और अन्तमें श्रीभगवान्‌के चिन्मय चरणोंके दर्शन कराने वाला दार्शनिक विज्ञान है। इस विज्ञानकी शिक्षा लौकिक और अलौकिक दोनों फल देने वाली है। पूज्यपाद महर्षियोंकी आज्ञा है कि, जिस शिक्षाप्रणालीमें परमात्माकी ओर अग्रसर होनेका अवसर प्राप्त हो और जिसके आश्रयसे जीवन-यात्रामें धर्मज्ञान बढ़े एवं शांति मिले, वही सच्ची शिक्षा है। इस समय जगत् भरमें जो शिक्षाप्रणाली प्रचलित है, उसमें पदार्थविज्ञान (सायन्स) के ज्ञानकी ही प्रधानता है।

पूज्यपाद महर्षियोंने दर्शन सम्बन्धी राज्यके दो भेद किये हैं। (१) ज्ञानजननी विद्यासेवित राज्य और (२) अज्ञान जननी अविद्यासेवित राज्य। पूज्यपाद महर्षियोंने जो दर्शन-शास्त्रोंमें क्रमोन्नतिवादका विस्तृत वर्णन किया है, उसके अनुसार उन्होंने प्रमाणित करके दिखाया है कि जीव उद्भिज्ज पिण्डसे आगे बढ़कर क्रमशः स्वेदज पिण्ड, अण्डज पिण्ड और अन्तमें जरायुज पशुयोनि में पहुँच जाता है। तदनन्तर जीव पूर्णावयव मानव पिण्डमें पहुँचकर मनुष्य बन जाता है। पहलेके इन चारों पिण्डोंके असम्पूर्ण होनेके कारण चारोंमें अविद्या-सेवित चार श्रेणीकी अज्ञानभूमियोंके अधि-

कार यथाक्रम पाये जाते हैं। कर्ममीमांसा-दर्शनने इन दार्शनिक सिद्धान्तको भलीभाँति प्रमाणित करके दिखाया है। मानव पिण्डमें पहुँचकर उसका तीन श्रेणियोंके अविद्या-सेवित अज्ञानप्रसूत तीन दर्शनोंका अधिकार यथाक्रम प्राप्त होता है। वे ही अविद्या-सेवित तीन अज्ञान भूमियोंके तीन दर्शन यथाक्रम ये हैं (१) देहात्मवादकी दार्शनिक भूमि (२) देहातिरिक्त आत्मवादकी दार्शनिक भूमि और (३) आत्मातिरिक्त शक्तिवादकी दार्शनिक भूमि। ये तीनों मत पहले भी मिलते थे और आजकलके पश्चिमी दर्शन तो प्रायः सभी इन्हीं तीनों भूमियोंके अन्तर्गत समझे जाते हैं। आध्यात्मिक क्रमोन्नति सिद्धान्तके अनुसार जीव चार जड़-राज्यकी योनियोंसे आगे बढ़कर जब मनुष्य बनता है, तब उसको अविद्या-सेवित तीन अज्ञानराज्यकी भूमियाँ प्राप्त होती हैं। जिनका ऊपर दिग्दर्शन कराया गया है। इसके बाद वैदिक सात ज्ञानभूमियोंका अधिकार प्रारम्भहोता है।

श्रीभगवान्की कृपासे अन्तमें मनुष्य क्रमशः सप्त ज्ञान भूमियोंके अधिकारको प्राप्त कर लेता है। वैदिक सप्तदर्शन इस प्रकारहैं,—न्यायदर्शन, वैशेषिकदर्शन, योगदर्शन, सांख्य-दर्शन, कर्ममीमांसा - दर्शन, दैवीमीमांसा - दर्शन और ब्रह्म-मीमांसा-दर्शन। वैदिक सप्त ज्ञान-भूमियोंके नाम ये हैं :— प्रथम–ज्ञानदा, द्वितीय–संन्यासदा, तृतीय–योगदा, चतुर्थ–लीलोन्मुक्ति, पंचम-सत्पदा, षष्ठ–आनन्दपदा, सप्तम-परात्परा

ये सातों भूमियां क्रमशः उपर्युक्त सातो दर्शनोंसे सम्बन्ध रखती हैं। इनमें पहलेके दो दर्शन पदार्थवाद दर्शन कहलाते हैं। उनके बादके दो दर्शन सांख्यप्रवचन दर्शन कहलाते हैं और अन्तके तीनों दर्शन मीमांसादर्शन कहलाते हैं। इस प्रकारसे तीन अवैदिक और सात वैदिक दर्शन सब समेत दस श्रेणीके दर्शन सिद्धान्त होते हैं। यही वेद और शास्त्रोंका तात्पर्य्य है।

तीनों अविद्या-सेवित दर्शनोंका अधिकार मनुष्य को अपने आपही प्राप्त होता है और धर्म्मात्मा व्यक्ति चाहे किसी धर्म्म मार्गका हो धर्म्म साधन करते करते अपने आपही उन तीनों नास्तिक अज्ञानभूमियोंको पार कर जाता है। तदनन्तर परमात्माकी कृपासे उन्नत मानव ज्ञानभूमियों-के राज्यमें पहुँच जाता है। इन दशों अधिकारोंके दर्शनोंका यथाक्रम सिद्धान्त विशद रूपसे सर्वसाधारणके समझने योग्य पुस्तकाकारमें प्रकाशित किया जाय कि सर्वसाधारण बुद्धिके लोग भी समझ सकें तो इससे जगत्का परम मङ्गल होगा। सब दर्शन शास्त्रोंका यदि विद्वज्जन श्रद्धापूर्वक अनु-शीलन और मनन करेंगे तो वे देखेंगे कि इनमें दर्शन मार्ग नीचेसे ऊपर तक सब एक तत्वसे युक्त है और श्रीभगवान्-के चरण कमलों की प्राप्ति इस मार्गका अन्तिम लक्ष्यस्थल है। इस प्रकारसे पदार्थविज्ञानके साथ ही दर्शन विज्ञानकी शिक्षा श्रृंखलाबद्धरूपसे विद्याभ्यासके समय दी जानी

चाहिए। जिसके अनुशीलन और मनन करनेसे मनुष्यकी बुद्धि विपरीत मार्गमें चलनेसे रुकेगी और मनुष्य जाति श्रीभगवान् के चरणों की छाया प्राप्त कर कृतकृत्य होगी।

श्रीभारतधर्म-महामण्डलकी मन्त्रिसभा के निश्चयानुसार मकर संक्रान्ति सं० २००४ से दो पुस्तक मालाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होने लगी हैं। जिनका नाम श्रीसूर्य्य ग्रन्थ माला और श्रीदत्तात्रेय ग्रन्थमाला है। इसमें से दत्तात्रेय ग्रन्थ माला में वैदिक सातों दर्शन यथाक्रम प्रकाशित किये जा रहे हैं और उनके साथ प्रत्येक दर्शन शास्त्र की विस्तृत भूमिका और उसकी सरल संस्कृत वृत्ति भी रहेगी। साथ ही साथ उस संस्कृत वृत्तिका राष्ट्रभाषा हिन्दीमें सरल अनुवाद रहेगा। इस ग्रन्थमालामें सप्तदर्शन अधिकारोंका क्रम समझानेके लिये और न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, योग दर्शन, सांख्य दर्शन, कर्ममीमांसाका श्रीभरद्वाज दर्शन (पूर्वार्ध), श्रीजैमिनि दर्शन (उत्तरार्ध), दैवीमीमांसा दर्शन और ब्रह्ममीमांसा दर्शन (वेदान्तदर्शन) का परस्पर सम्बन्ध और दार्शनिक रहस्य प्रकाशित करनेके लिये श्रीदत्तात्रेय दर्शनादर्श नामक यह स्वतन्त्र संस्कृत ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो चुका है। इस श्रीदत्तात्रेय ग्रन्थमालामें वैदिक दर्शन शास्त्रके और भी उपयोगी ग्रन्थ तथा विस्तृत भाष्य आदि ग्रन्थ भी क्रमशः प्रकाशित होंगे। ऐसा यत्न किया जायगा जिससे देशके सब शिक्षाविभागोंमें इन ग्रन्थों-

का सदुपयोग हो सके। श्री सूर्यग्रन्थमाला डवल क्राउन अठपेजी कमसे कम पचास पृष्ठ और श्रीदत्तात्रेय ग्रन्थमाला डवल क्राउन सोलह पेजी कमसे कम पचास पेज प्रतिमास निकलती रहे, ऐसा प्रयत्न किया जायगा।

ऐसा भी विचार है कि यदि भविष्यत्में धनकी प्राप्ति होगी तो इसी विषयकी एक अंग्रेजी भाषाकी ग्रन्थमाला भी स्वतन्त्र रीतिसे प्रकाशितकी जायगी। जिसमें वैदिक दर्शन शास्त्रके अनुसार चतुर्विध भूतसंघकी स्वाभाविक क्रमोद्ध्र्वगतिका रहस्य अच्छी तरह समझाकर जीवके क्रमाभिव्यक्तिवादका सिद्धान्त समझाया जायगा। सप्त अज्ञान भूमियों और सप्त ज्ञान भूमियोंका स्वरूप बताया जायगा। तीन अवैदिक दर्शन और सात वैदिक दर्शन इन सबोंका यथाक्रम वर्णन किया जायगा। उसमें केवल सप्त वैदिक दर्शनोंके सूत्र रहेंगे और अंग्रेजी भाषामें ऐसी टीका रहेगी जिससे विदेशी भाषाभाषी विद्वान् गण सब दर्शन भूमियोंका सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। यदि देश, काल और पात्र अनुकूल हुए तो अन्यान्य विदेशी बड़ी व्यापक भाषाओंमें भी ये सब ग्रन्थ निकल सकते हैं। इस प्रकारसे यदि श्रीभगवान्की इच्छा होगी तो दार्शनिक ज्ञानका प्रचार भारत खण्ड (हिन्दुस्थान) में ही नहीं किन्तु समस्त भारतवर्ष (पृथ्वी) भरमें हो सकता है। हिन्दी और संस्कृत भाषाओंमें सूर्योदय मासिक पत्र स्वतन्त्र रीतिसे जो प्रकाशित होते हैं उनके साथ जो श्रीसूर्य्य

ग्रन्थमाला नामक एक स्वतन्त्र ग्रन्थमाला प्रकाशित हो रही है, उसमें सनातनधर्मको अच्छी तरह समझानेके लिये श्री-दत्तात्रेय धर्ममीमांसा नामक असाधारण संस्कृत ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो रहा है और उसके कुछ अध्याय छप भी चुके हैं। यद्यपि संस्कृत भाषामें धर्म सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, परन्तु धर्मके विज्ञान और उसके अंगोंको अच्छी तरहसे समझानेवाला और शंका समाधान करने वाला इस प्रकारका ग्रन्थ आज तक संस्कृत भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ था। इस वृहद् ग्रन्थमें सब समेत ५४ अध्याय हैं जो सब क्रमशः हिन्दी अनुवाद सहित श्रीसूर्य्य ग्रन्थमालामें प्रकाशित होंगे। श्रीसूर्य्य ग्रन्थमालामें हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा भाषियोंके मंगलार्थ अनेक वहुमूल्य अप्रकाशित ग्रन्थ प्रकाशित होंगे और इस समय अंग्रेजी भाषाका 'हाउ पीस पासिवुल' नामक अंग्रेजी ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। जो ग्रंथ बहुत वड़े होंगे, वे श्रीसूर्य्यग्रन्थमालामें प्रकाशित होंगे और जो पाठ्यपुस्तक रूपमें या छोटे ग्रन्थ होंगे, वे श्रीदत्तात्रेय-ग्रन्थमालामें छपेंगे। प्रकाशक विद्वन्मण्डलीका यह नवीन उद्योग भारतखण्ड (हिन्दुस्थान) की शिक्षाप्रणालीमें एक नवीन जीवन प्रदान करेगा और भारतवर्ष (पृथ्वी भर) की सब सभ्य जातियोंकी शिक्षाप्रणालीमें विशेष पवित्रता और मौलिकता उत्पन्न करेगा। जिससे मनुष्य जाति मात्रको पूज्यपाद त्रिकालदर्शी महर्षियों द्वारा प्रवर्तित विज्ञानकी

ज्योति प्राप्त हो सके, ऐसाही नियमित प्रयत्न होगा। इसमें सभीका यथायोग्य सहयोग प्रार्थनीय है। श्री भगवान् की कृपासे श्रीभारतधर्ममहामण्डलका यह कार्य सफल हो और जगत् का मंगल हो यही सर्वशक्तिमान् भगवान्के चरणोंमें प्रार्थना है।

श्रीमहामण्डलका विश्वास।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलका यह दृढ़ विश्वास है कि उसके अनुसन्धान विभाग और शास्त्रप्रकाश विभाग द्वारा जो ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं और होंगे, विशेषतः जो संस्कृत भाषाके ग्रन्थ योगशास्त्र और दर्शनशास्त्रके ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं और होंगे, उनके द्वारा वर्तमान कलिकालके अन्तपर्यन्त आध्यात्मिक उन्नति पर ध्यान रखनेवाली आर्यजाति की संस्कृति की सुरक्षा होगी और इन ग्रन्थोंका यदि पृथ्वीके अन्य बड़ी बड़ी भाषाओंमें अनुवाद हुआ तो मनुष्यजातिमात्र-का अवश्य कल्याण होगा। श्रीदेवीभागवत, श्रीविष्णुभागवत (श्रीमद्भागवत) और श्रीअणुभागवत (कल्किपुराण) इन तीनों शास्त्रीय ग्रन्थोंके पाठ करनेसे विद्वानोंको यह प्रतीत होगा कि देवलोककी सहायताके द्वारा हिन्दूजाति कैसे सुर-क्षित है और रहेगी। चाहे आसुरी आचार विचार और आसुरी शिक्षादीक्षाके प्रभावसे कितनी ही हानि पहुँचे और चाहे धर्महीनता और परलोक पर अविश्वास तथा कुशिक्षा

के प्रभावसे कितनाही एकाकार फैलाया जाय, परन्तु दैवी राज्यसे सुरक्षित हिन्दूजाति तथा उसकी वैज्ञानिक संस्कृति कभी निर्मूल नहीं हो सकती। शास्त्र कहता है कि कलिकाल की आयु ४३२००० वर्ष है। उसमेंसे अभी पाँच हजार और कुछ वर्ष व्यतीत हुए हैं। हमारे सब शास्त्र एक वाक्य होकर कहते हैं कि कलिकालके अन्त समयमें कल्कि भगवानका अवतार होगा। उस समयतक हिन्दू संस्कृति और हिन्दूधर्म साङ्गोपाङ्ग रहेगा, नष्ट नहीं होगा और श्रीभगवान कल्कि देवकी कृपासे और दैवीजगत्के सहयोगसे पुनः सत्ययुगके उपयोगी देश और काल बन जायगा। वेद और शास्त्रोंके अनुसार जब मन्वन्तर बदलते जारहे हैं और उनकी सब बातें शास्त्रों के अनुसार मिलती जा रही हैं तो हमारे शास्त्रों की भविष्यवाणी अवश्य सत्य होगी।

श्रीमहामण्डलके सभ्यवृन्द।

वर्तमान समयमें देश, काल और प्रान्तोंका बहुत कुछ परिवर्तन होगया है। इस कारण उस परिवर्तनके अनुसार श्री महामण्डल के नियमों में न्यूनाधिकता की गई है। उस नवीन परिवर्तन के अनुसार श्रीमहामण्डलके सभ्यके सम्बन्धमें नियमावलीमें भी जो परिवर्तन हुए हैं वे नीचे दिये जाते हैं।

श्रीमहामण्डलके चार श्रेणीके सभ्य होंगे यथाः—(क) संरक्षक (ख) प्रतिनिधिसभ्य (ग) सहायकसभ्य (घ) सहयोगी सभ्य। (क) संरक्षकः—सनातनधर्मके धर्माचार्यगण श्रीमहामण्डलके स्थायी संरक्षक होंगे। भारतके समस्त प्रान्तोंके गण्यमान्य, शक्तिशाली, धनी, मानी, साम्प्रदायिक नेतागण तथा समाजपतियोंमेंसे जिनको इस पद-गौरवके योग्य समझा जायगा, वे भी संरक्षक हो सकेंगे।

(ख) प्रतिनिधिसभ्यः—श्रीभारतधर्ममहामण्डलका कार्य क्षेत्र जितने प्रान्तोंमें विभक्त करनेसे धर्मकार्य की सुविधा समझी जायगी वे सब विभाग प्रान्त समझे जायँगे। तत्तत् प्रान्तोंमें वर्णाश्रम-धर्म माननेवाले सज्जनोंमेंसे चुनकर उक्त प्रान्तोंमें धर्मकार्यकी व्यवस्था करनेके लिये जो व्यक्ति चुने जायँगे, वे प्रतिनिधिसभ्य कहायेंगे।

(ग) सहायकसभ्यः—श्रीभारतधर्ममहामण्डलके उद्देश्यों तथा उसके कार्य विभागोंके लिये जो धार्मिक सज्जन अपनी विद्यासे, अपने धनसे तथा अपनी शक्तिसे सहयोग करेंगे, वे सहायकसभ्य समझे जायेंगे। सहायकसभ्य किसीभी धर्मके माननेवाले स्त्री-पुरुषोंमेंसे अपनी योग्यताके अनुसार चुने जा सकते हैं।

(घ) सहयोगीसभ्यः—सहयोगीसभ्य वे कहायँगे जो सज्जन श्रीभारतधर्ममहामण्डलके धर्मकार्योंमें सहयोग देंगे और अपने घरके व्यक्तियोंमें एवं बालक-बालिकाओंमें धर्म-

शिक्षाका नियमित यथासंभव प्रयत्न करनेका अभिवचन देंगे
महामण्डलकेसभ्य निःशुल्क होंगेः—श्रीभारतधर्ममहामण्डल-
के संरक्षक प्रतिनिधि सहायक और सहयोगीसभ्य होनेके लिये
किसी शुल्कका नियम नहीं रहेगा। यदि कोई सज्जन अपनी
स्वेच्छासे कुछ सहायता देना चाहेंगे तो वे दे सकेंगे। उदार
और धर्मबुद्धिसम्पन्न सभ्य और सभ्याओंसे शास्त्र-प्रकाश
विभाग, पुस्तक पुस्तिकाओं द्वारा धर्म प्रचार और सूर्योदय
आदिके लिये एककालिक दान, मासिकदान अथवा वार्षिक
दान कृतज्ञतापूर्वक महामण्डल-मन्त्रिसभा स्वीकार करेगी।

श्रीमहामण्डलका शास्त्रप्रकाशन-विभाग।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके शास्त्र-प्रकाशके द्वारा राष्ट्र
भाषा हिन्दी, अमरभाषा संस्कृत, अंग्रेजी और हिन्दुस्तानकी
अन्यान्य प्रान्तीय भाषाओंमें सैकड़ों ग्रन्थ बने हैं और प्रका-
शित हो रहे हैं। संस्कृतभाषामें जो मुख्य ग्रन्थ प्रकाशित
हुए हैं और हो रहे हैं, उनके नाम निम्नलिखित हैंः—(१)
न्यायदर्शन (सरल संस्कृत वृत्तिसहित) (२) वैशेषिकदर्शन
(सरल संस्कृतवृत्ति सहित) (३) योगदर्शन (सरल
संस्कृत वृत्ति सहित) (४) सांख्य दर्शन (सरल संस्कृत वृत्ति
और हिन्दीभाषा सहित) (५) श्रीभरद्वाज कर्ममीमांसा
दर्शन (सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाष्य-सहित (६) श्रीजैमि-
नीय कर्ममीमांसा दर्शन (सरल संस्कृत वृत्ति सहित) (७

दैवीमीमांसा दर्शन, जो वेदके उपासना काण्डकी मीमांसा है (सरल संस्कृतवृत्ति विस्तृत संस्कृत भाष्य और हिन्दी भाष्य सहित) (८) वेदान्त दर्शन अर्थात् ब्रह्ममीमांसा दर्शन, जिनके अनेक भाष्य प्रचलित हैं. तौभी उसका एक समन्वय-भाष्य बना है। (९) श्रीशम्भुगीता (हिन्दी अनुवादसहित) (१०) श्रीविष्णुगीता (हिन्दी अनुवादसहित) (११) श्री-शक्तिगीता (हिन्दी अनुवादसहित) (१२) श्रीधीशगीता (हिन्दी अनुवाद सहित) (१३) श्रीसूर्यगीता (हिन्दी अनु-वाद सहित) (१४) श्रीगुरुगीता (हिन्दी अनुवाद सहित) (१५) संन्यासगीता (हिन्दी अनुवाद सहित) सब श्रेणीके संन्यासियोंके उपकारार्थ (१६) श्रीसंन्यास धर्मपद्धति (योग-मार्गके उपयोगी) (१७) मन्त्रयोगसंहिता (१८) हठयोग-संहिता (१९) लययोगसंहिता (२०) राजयोगसंहिता (२१) श्रीमधुसूदनसंहिता पुराण समझनेकेलिये (२२) पुराणरहस्य कर्मकाण्ड समझनेकेलिये (२३) श्रीदत्तात्रेयदर्शनादर्श, धर्मके सार्वभौम रूपको और उसके विस्तृत अङ्गोंको सम-झनेकेलिये (२४) श्रीदत्तात्रेय धर्ममीमांसा, ये सब ग्रन्थ संस्कृतमें हैं।

अन्यान्य आवश्यक ग्रन्थ।

राष्ट्रभाषा हिन्दीकी पुष्टिके लिये धर्मग्रन्थके सम्बन्धसे श्रीमहामण्डलने इतना अधिक कार्य किया है कि जो और

किसी संस्थासे नहीं हुआ है। हिन्दी भाषामें मौलिक ग्रन्थ और हिन्दी भाषामें अनुवादित ग्रन्थोंकी कुछ नामावली नीचे दी जाती है।

धर्मकल्पद्रुम—ब्रह्मीभूत श्रीस्वामीदयानन्दजी महाराज विरचित। सुबृहत् आठखण्डोंमें पूर्ण यह ग्रन्थ सनातनधर्म का विश्वकोश है। हिन्दूजातिकी पुनरुन्नतिके लिये जिनजिन विषयोंकी आवश्यकता है, उन सभी विषयोंका इसमें समावेश किया गया है। इसमें साम्प्रदायिक पक्षपातका लेशमात्र भी नहीं है और निष्पक्षभावसे सब विषय प्रतिपादित किये गये हैं, जिससे सब प्रकारके अधिकारी कल्याण प्राप्तकर सकें। आठ खण्डोंका मूल्य २५॥) रु०

प्रवीणदृष्टिमें नवीन भारत—यह ग्रन्थ बी० ए० क्लासका पाठ्य हो सकता है। इसके दो खंड हैं। प्रत्येकका मूल्ल ३)

नवीनदृष्टिमें प्रवीण भारत—यहभी ग्रन्थ बी० ए० क्लास का पाठ्य हो सकता है। मूल्य १॥)

शास्त्र चन्द्रिका—यह आई० ए० क्लासका पाठ्य हो सकता है। मूल्य २।)

साधन चन्द्रिका—यह ग्रन्थभी आई० ए० क्लासका पाठ्य हो सकता है। मूल्य २॥=)

धर्मचन्द्रिका—यह ग्रन्थ मैट्रिक क्लासका पाठ्य हो सकता है मूल्य १॥)

आर्य गौरव—यह ग्रन्थ स्कूलकी ६वीं कक्षाका पाठ्य हो सकता है मूल्य ।॥)

आचार चन्द्रिका—यह ८वीं कक्षाका पाठ्य हो सकता है। मूल्य ।॥)

नीति चन्द्रिका—यह स्कूलकी ७वीं कक्षाका पाठ्य हो सकता है। मूल्य ।॥)

सनातन धर्मदीपिका—यह स्कूलकी ६ठी कक्षाका पाठ्य हो सकता है। मूल्य १=)

चरित्र चन्द्रिका—यह दो भागोंमें है और स्कूलकी ५वीं तथा ४थी कक्षाका पाठ्य हो सकता है। प्रथम का मूल्य १॥) और दूसरे का १।॥=)।

धर्मप्रश्नोत्तरी—यह स्कूलकी ३री कक्षाका पाठ्य हो सकता है। मूल्य ।=)

धर्मविज्ञान—यह ग्रन्थ तीन खण्डोंमें प्रकाशित है। यह एम० ए० क्लास का पाठ्य हो सकता है। प्रत्येक का मूल्य क्रमशः ५) ४) ४)

कहावत रत्नाकर—इस वृहत् ग्रन्थमें हिन्दी कहावतोंका प्राधान्य रखकर उनके साथ संस्कृत, अंग्रेजी, पारसी और उर्दू कहावतें दी गई हैं। मूल्य १०॥)

कर्म रहस्य	॥।≡)
कुमारिल भट्ट	१॥)
श्रीव्यासशुक सम्वाद	।=)
दुर्गासप्तशती भाषाटीका	१॥)
सजिल्द	१॥।=)
धर्मा-धर्म प्रश्नोत्तरी	-)॥
सदाचार प्रश्नोत्तरी	=)
तीर्थ और देवपूजन प्रश्नोत्तरी	-)॥
महिला प्रश्नोत्तरी	-)॥
परलोक प्रश्नोत्तरी	-)॥
पूजा और प्रार्थना	≡)॥।
भाभीके पत्र	॥।)
हिन्दू धर्मका स्वरूप	=)
गायत्री मंत्रकी टीका	=)

अन्यान्य पुस्तकें

तुलसीकृत रामायणका [वंगला अनुवाद]	६)
आदर्श जीवन संग्रह	२।)
त्रिवेदीय सन्ध्या	॥-)
भूदवेचरितम्	२।)
पारिवारिक प्रवन्ध (वँगला)	१॥)
आचार प्रवन्ध (वँगला)	१॥)
गोरक्षा ,,	॥-)
भक्तितत्त्व ,,	१॥)
महर्षिचरित ,,	१॥)
अगस्त्य चरित्र ,,	॥।)
सांख्य रहस्य ,,	१=)
योग रहस्य ,,	॥।≡)
वैशेषिक रहस्य ,,	१=)
न्याय रहस्य ,,	१=)
पुराण तत्त्व ,,	१॥-)
जन्मान्तर तत्त्व ,,	१=)
साधन तत्त्व (वँगला)	१॥)
अवतार तत्त्व ,,	३)
हितोपदेश ,,	३)
नारीधर्म ,,	१॥)
सदाचार-शिक्षा ,,	॥।)
नीतिशिक्षा	॥।)
धर्मकर्म दीपिका	॥।)
धर्मसोपान	।=)
मंत्रयोग संहिता	१॥)

ग्राम संघटन का कार्य

संघ-शक्तिमें जो जाति सफलता प्राप्त करना चाहती है उसकी शृङ्खला तथा व्यवस्था का कार्य पहले ग्रामों से शुरू होना चाहिये। हिन्दू-संस्कृतिके अनुसार ब्राह्मणों की रक्षासे हिन्दू जातिकी रक्षा होती है, ऐसा निश्चित किया गया है। प्राचीन और नवीन सब धर्माचार्य इसमें एकमत हैं। दूसरी ओर हिन्दू समाजकी वर्तमान अवस्थाके अनुसार साधुओं का प्रश्न भी जटिल हो गया है। इस समय साधुओंकी संख्यामें बहुत वृद्धि हुई है और उनका प्रभाव भी कम नहीं है। इस कारण सामाजिक संघशक्तिके पक्षपातियों को सबसे पहले ब्राह्मणोंकी सुरक्षा शास्त्रोक्त संस्कारों द्वारा उनके धर्मकी उन्नति और योग्यव्यक्तिके पुरस्कार तथा अयोग्य-व्यक्तिके तिरस्कार द्वारा प्रत्येक ग्राम, नगर और जनपदमें ब्राह्मण-जाति के अभ्युदयके लिये सबसे पहले ध्यान देना उचित है और साधुओंके विषयमें भी योग्यता देखकर उनका सम्मान करना उचित है। असाधुओंका तिरस्कार औरसच्चे साधुओंका सम्मान करने की ओर भी गृहस्थोंको ध्यान-देना उचित है।

ग्रामोंमें अबतक विभिन्न जातियोंकी पंचायते सुरक्षित हैं। केवल उच्चजातियोंकी पंचायतें शिथिल हो गई हैं। ग्राम-संघटन में ध्यान रखना चाहिये कि जाति पंचायतें नए

न हो सकें; क्योंकि व्यष्टि शक्तिसे ही समष्टि-शक्तिका संग्रह होता है।

चाहे किसी श्रेणीको शिक्षा प्रणाली हो, जिसमें धार्मिक-शिक्षा द्वारा चरित्र संघटनकी व्यवस्था नहीं है, वह शिक्षा-प्रणाली असम्पूर्ण है। अतः धर्मशिक्षा बालक बालिकाओंको बाल्यावस्था सेही दी जाय, तभी कल्याण हो सकता है। इन सब शृङ्खलाओं और शिक्षाके सम्बन्धमें जो परामर्शकी आवश्यकता होगी, वह श्रीभारतधर्म महामण्डल प्रधान कार्यालय, काशीको लिखनेसे पूर्ण हो सकेगी और शिक्षाके लिये जो पुस्तक-पुस्तिकाएँ आवश्यक हों, उनकी भी पूर्तिकी जायगी। आनन्दकी बात है कि इस समय सब नेताओंकी दृष्टि ग्राम-संघटनकी ओर आकृष्ट हुई है और गवर्नमेण्ट भी यही चाहती है। किसी किसी प्रान्तमें गवर्नमेण्टकी ओरसे उद्योग भी प्रारम्भ होगया है। अतः भारतके सब प्रान्तोंके नेतृ-वृन्दसे सविनय प्रार्थना है कि वे गवर्नमेण्टके इस शुभ कार्यमें सहानुभूति रखकर अपने अपने ग्रामों, नगरों और जनपदमें अपने अपने देश, काल और पात्रानुसार इस सुअवसर पर शृङ्खला बाँधने और सुव्यवस्था करने का दृढ़ निश्चय करलें, जिससे हिन्दू-संस्कृति और सनातन धर्ममें बाधा न हो और हिन्दू संघशक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाय, ऐसा प्रयत्न करें। यह दृढ़ निश्चय रक्खें कि सनातनधर्म सर्वजीव हितकारी और त्रिकालमें सुरक्षित है। दैवराज्य

इसका सहायक है। इस पुण्य कार्यमें यदि कोई बाधा उपस्थित हो, तो दैव जगत्से सहायता प्राप्त होगी। प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक जनपद और प्रत्येक नगरके सब श्रेणीके नेतृवृन्दों को संक्षेपसे निवेदन किये हुए ऊपर लिखित विषयों पर, यदि वे ध्यान देंगेऔर इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करेंगे तो उनको दैवी सहायता अवश्य प्राप्त होगी और वे धर्म तथा यशके अधिकारी होंगे।

प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य।

हिन्दू समाजके प्रत्येक स्त्री या पुरुष जिनके चित्तमें स्वधर्मानुराग जातिप्रेम और स्वदेशकी मंगल कामना है, उनको निम्नलिखित शुभ परामर्शों पर ध्यान देना उचित है।

(१) हिन्दूजातिका सबसे प्राचीन प्रतिष्ठान श्रीभारत धर्ममहामण्डल है। जिसका कार्यक्षेत्र समस्त भारतखण्ड है, और जिसका प्रधान कार्यालय काशीमें है। उसका सभ्य या सभ्या होना चाहिये। प्रत्येक व्यक्तिके एक पोष्ट कार्ड भेज कर प्रधान कार्यालय काशीको खबर देने पर उनका नाम दर्ज किया जाता है। जो पुरुष सभ्य और जो महिला सभ्या होना चाहें, उनसे इसके लिये किसी प्रकार का शुल्क या चन्दा लेनेका कोई नियम नहीं है।

(२) श्रीभारतधर्म महामण्डल द्वारा स्थापित धार्मिकाध्यात्मिक संस्कृत विश्वविद्यालयकी परीक्षाका केन्द्र भारत केसब प्रान्तों में स्थापित हैं। जहाँ परीक्षा-केन्द्र नहीं है,

उस ग्राम, नगर और जनपदमें अवश्य परीक्षा केन्द्र स्थापित होना चाहिये । इसके लिये किसी प्रकारका परीक्षा खर्च नहीं देना पड़ता है; बल्कि परीक्षा करनेके प्रबन्धमें जो खर्च होता है, वह प्रधान कार्यालयसे दिया जाता है। संस्कृत हिंदी या अंग्रेजी भाषा में निबन्ध लिखकर भी विद्वान्‌गण सम्मान, योग्य उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। इसके विशेष जानकारीके लिये प्रधान कार्यालयसे परीक्षा नियमावली मगाकर देखें।

(३) श्रीमहामण्डलका एक मानार्पण विभाग है। जिसके द्वारा संस्कृत तथा अन्य भाषा के विद्वानों और धार्मिक व्यक्तियोंको यथायोग्य धर्ममान और विद्यामानसे उत्साहित किया जाता है। इस विभागसे जो केन्द्र, शाखा सभाएँ और सामाजिक संगठन के अधिकारी गण लाभ उठाना चाहें, वे प्रधान कार्यालय से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

(४) श्रीमहामण्डलसे और उससे सम्बन्ध युक्त संस्थाओं से अनेक धर्म पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और हो रही हैं। उनके सम्बन्ध में या अन्यान्य धर्मग्रन्थ के सम्बन्ध में जिनको आवश्यकता हो, वे अन्नपूर्णादान भण्डार, श्रीमहामण्डल भवन, जगतगंज बनारस कैंट, इस पते पर पत्रव्यवहार करें।

(५) श्रीमहामण्डलके अनुसन्धान और शास्त्र प्रकाशन विभागके द्वारा दो ग्रन्थमालाएँ प्रकाशित हो रही हैं जिसमें पहली श्रीदत्तात्रेय ग्रन्थमाला है। इससे संसार भरमें दार्श-

निक शिक्षाविस्तारके शुभ अभिप्रायसे सांख्यदर्शन योग-दर्शन, कर्ममीमांसादर्शन, दैवीमीमांसादर्शन, ब्रह्ममीमांसा दर्शन अर्थात् वेदान्त दर्शन और दो प्रारंभिक दर्शन यथा न्यायदर्शन और वैशेषिकदर्शन, ये सब दार्शनिक ग्रन्थ सरल संस्कृत वृत्ति और हिन्दी अनुवाद सहित तथा सरल बोध्य विस्तृतभाष्य सहित अलग अलग प्रकाशित हो रहे हैं। इस ग्रंथमालाका सब पुस्तकालयों, संस्कृतकालेजों, पाठशालाओं और दार्शनिक शिक्षा के अभिलाषुक सज्ज-नोंके संग्रह और प्रचार करने में सहायक होनेसे देशका विशेष कल्याण होगा। जो सज्जन इस ग्रंथमालाको लेना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करें। कार्याध्यक्ष-श्रीमहामण्डल जगतगंज, बनारस।

(६) दूसरी ग्रन्थमालाका नाम श्रीसूर्यग्रंथमाला है जिसमें 'श्रीदत्तात्रेय धर्ममीमांसा' नामक ग्रंथ नियमित प्रकाशित होता है। यह वस्तुतः सनातनधर्मका विश्व-कोष है। जिसके पहले स्कन्धका नाम धर्मविज्ञान स्कन्ध है जिसमें १० अध्याय हैं। दूसरे स्कन्धका नाम धर्मनिर्णय स्कन्ध है जिसमें सनातनधर्मके १६ अंगों का विस्तृत वर्णन है, जिसमें १६ अध्याय हैं। और अन्तिम धर्मविचार स्कन्ध के २८ अध्याय हैं जिसमें धर्म सम्बन्धी सब शंकास्पद विषयोंकी मीमांसाहै। प्रत्येक सनातनधर्मी गृहस्थों तथा धर्म एवं धर्म सम्बन्धी प्रतिष्ठानों को इसका अवश्य संग्रह करना

उचित है। इस ग्रंथमालामें योग आदिके और भी अनेक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे। इनके मिलने का पता निम्नलिखित है। अध्यक्ष श्रीभारतधर्ममहामण्डल, प्रधान कार्यालय, जगत् गंज काशी।

(७) प्रत्येक ग्राम, जनपद और नगर में श्रीभारतधर्म महामण्डल के कार्यकर्ताओंका होना नितान्त आवश्यक है। वे ग्राम संघठन के कार्यमें, धर्मशिक्षा विस्तारके कार्यमें और सद्विचार प्रचारके कार्यमें बहुत कुछ सहायक हो सकेंगे।

(८) आर्यमहिलाओंकी सब प्रकारकी उन्नतिके लिये अखिल भारतीय-आर्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद् नामक एक रजिस्टर्ड संस्था है, जिसका कार्यालय महामण्डल भवनमें ही है; परन्तु उसका स्कूल विभाग, कालेज विभाग, छात्रानिवास विभाग तथा अन्नसत्र विभाग आदि प्रसिद्ध तीर्थ पिशाचमोचनके ऊपर तीर्थके उत्तर दिशामें महामण्डल नगरके निकट स्थापित है। इस संस्थासे आर्यमहिलामात्र अनेक तरह की सहायता प्राप्त कर सकती हैं।

शारदा मुद्रण, बनारस